वर्ष
९०
गीताप्रेस, गोरखपुर
संख्या
८

सावित्री शैलजा रम्भा नानक्यंश समुद्भवा।
रामस्यांश समुद्भुतो नारायणोऽपि केशवः।।
त्र्योप्यांशा समुद्भुता श्रीभुलीला विभेदतः।
श्री भवेत् रुक्मिणी साक्षात् सत्यभामा द्दढवताः।।
लीलास्याद् राधिका सर्वलोक प्रपुजिता।
जानकी च परा प्राहुः शाश्वती रामवल्लभा।।

उमा, रमा, ब्रह्माणी (त्रिदेवी) ये सब मां सीता के अंश से उत्पन्न होते हैं। श्री राम के अंश से श्रीमन्नारायण और श्री कृष्ण उत्पन्न होते हैं। मां सीता के अंश कला से श्री, भु और लीला शक्ति होती हैं। श्री शक्ति से रुक्मिणी, भु शक्ति से सत्यभामा और लीला शक्ति से राधिका जी होती हैं। राम वल्लभ मां सीता तो स्वयं शाश्वत परा शक्ति हैं।

~सुंदरी तंत्र

श्रीरामो भगवान पुर्णः कलाभिः पुरुषोत्तमः।
कोटिलक्ष्मीसहस्त्रणाम् अशंनि जनकात्मजा।।

एतयारेव दिव्यांशो राधाकृष्णात्मकौ ब्रजे।
अन्याश्च सकला गोप्यस्तदंशाशां उदीरिता।।
द्वारिकायां रुक्मिणीयं महालक्ष्मी महेश्वरी।
अन्याश्च सत्यभामाद्यास्तदंशा सहजात्मिका।।

Shri Ram is bhagwan of all kalas. Thousands of maa laxmi emanates from maa sita. From divine portions of shri Sita Ram, Radha Krishna does lila in vrindavan. All Gopis, mahalaxmi Rukmini, bhu Devi avtar satyabhama are all parts of maa sita.

~adi ramayan

सर्वदेवम समुत्पन्ना सर्वदेवमयी ईश्वरी।
सर्वपोरूषवल्ली च सर्वधर्म अधिकारिणी।।

~ Maa Sita is the Goddess from whom all the gods originates and contains

all the gods. She is the one who grants porush (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) of all men and the authority of all religions.

(Rudrayamal tantra)

लक्ष्मीगौंरीं गिरां देवी गंगा गायत्र्यधीश्वरी।
अस्या एव कलांशाः सहजानंदिनीश्रियः।।

From Maa Sita 's ansh kala, maa laxmi,maa gouri, maa saraswati, maa ganga and Gayatri had originated.

Adi ramayan

आद्या सा प्रकृति सीता आद्यस्तु पुरुषोत्तम।
गुणातीतो भवान्नित्यो नित्यभुता सनातनी।।

That first nature (आदि प्रकृति) is Sita and the first is the best of men.(श्रीराम ही आदि पुरुषोत्तम हैं)

Transcendental to the modes of nature, Thou art eternal, ever-being, eternal.

Maha sundari tantra

सर्वशक्तिमयी सीता गुणातीतो चिदात्मिका।
निमिषार्द्धे जगत्सर्वं क्योंकि विकरोति।।

Maa Sita is omnipotent (सर्वशक्तिमयी) and transcends the modes of nature. Because she transforms or creates the whole world in half a moment.

Brahma samhita

सर्वदेवम समुत्पन्ना सर्वदेवमयी ईश्वरी।
सर्वपोरूषवल्ली च सर्वधर्म अधिकारिणी।।

Maa Sita is the Goddess from whom all the gods originates and contains all the gods. She is the one who grants porush (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) of all men and the authority of all religions.

Rudrayamal tantra

Aadi Devi maa Sita as supreme goddess of lila

सीता च सुंदरी यत्र सर्वलीलाधिदेवता।
चित्रकूटाद्रिके रम्ये यद् वृन्दावनम् अद्भुतम्।।

Shuka samhita

श्री जानकीदेवी महासूंदरी ही सर्व लीला की अधिदेवी हैं और जहां चित्रकूट पर्वत में है जो आश्रयमय है वही से संपुर्ण गोलोक (वृन्दावन धाम,) दिख पड़ता है।

आह्लादिनी पराशक्तिः सर्वलीलाधिदेवता।
अनेक कोटि लक्ष्मीनामंशिनी परा देवता।।

Adi ramayan 3.53.18

श्रीसीता जी ही श्रीराम की आह्लादिनी पराशक्ति है और सर्व लीलाओं की अधिदेवी हैं जिनके अंश मात्र से अनेकों कोटि लक्ष्मी होती हैं।

Aadi Devi maa Sita

आह्लादिरुपिणी सिद्धी शिवा शिवकरी सतीम्।
नमामि विश्वजननी रामचन्द्रष्वल्लभाम्।।

I bow down to ahladini shakti of shri Ramchandra who is very auspicious siddhi ,uma and who is mother of universe.

Skandpuran 3.1.46.57

Maa sita as tridevi swarupini in skandpuran

आत्मविद्यां त्रयीरुपाम् उमारुपाम् नमाम्यहम्।
प्रसादभिमुखीं लक्ष्मी क्षीरब्धितनया शुभाम्।।

I bow down to Maa Sita with great favour, who is in the form of spiritual knowledge in three Vedas (maa saraswati) , who is in the form of maa uma, who is in the form of maa laxmi the daughter of ocean of milk.

Skandpuran 3.1.46.54

ज्ञानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित्, ध्यानं सोता नाम तुभ्यं न किचित् । भक्तिः सीतानाम तुल्यं न काचित्, तत्त्वं सीता नाम तुल्यं न किञ्चित् ॥ ६ ॥

नान्यः पन्था विद्यते चात्मलब्धी, नान्यो भावो विद्यते चापि लोके । नान्यद् ज्ञानं विद्यते चापि वेदेष्वेवं सीतानाम मात्र विहाय ॥ १० ॥

~ There is no gyana equivalent to The name of Sri Sita, There is no Bhakti equivalent to Sri Sita Nama and There is no Tattvam Equivalent to Sri Sita. The one who Recites Her name with Love, That person has got The Greatest gyana, That Person is the Greatest Bhakta and That Person Knows The True Tattvam of Vedas. That Gyana of Vedas, devoid of Love for Her name, is of no value. For Self realisation and Realising The Supreme Atma, Sita Nama is the only way, There is no other gyana or way in the vedas. Therefore, All wise ones should Recite Sita Nama.

(Sri Brahma Ramayana 66.9-10, quoted in Sri SitaRama Tattvam Nam Prakasham)

Maa sita in brahma samhita

(Quoted in sita stotra sudhasagar)

गोलोक मण्डले रम्ये सन्तानक वनान्तर।
सखिभिः कोटिभियुक्ता रत्नसिहंसनस्थितम्।।
कोटि सुर्यप्रतिकाशां सच्चिदानन्द विग्रहान्।
परिपुर्णतमां शक्ति प्रभामण्डलं मण्डिताम्।

In golok, maa Sita roams in forest,(pramodvan) and surrounded by thousands of sakhis.

She is seated in simhasan that is filled with many jewels as Most Supreme Goddess. SITA is Paripurntam shakti.

Sita Ram as supreme personality of godhead (swaym sakshat bhagwan)

Shri Ram says to Sita:-

त्वद् अंशा एव राधा सा प्रिये वृन्दावनेश्वरी।
मद् अंश एव नियतः कृष्णो गोपेन्द्र नन्दनः।।

Shuka samhita

रामांशो भगवान् कृष्णः सीतांशो राधिकेश्वरी।

Adi ramayan

Meaning:-

From Shri Ram 's ansh, bhagwan shri krishna came and from Maa Sita's ansh, shrimati Radhika Rani came.

अस्या कटाक्षमात्रेण कोटिब्रह्माण्ड निर्मितः। कोटयः विरचीनं विष्णुनां चैव कोटयः।

कोटयश्च रुद्रानां शक्राणां चैव कोटयः। उत्पद्यन्ते विकुर्वन्ति विलीयन्ते ततस्तथा।।

Aadi Ramayan 3.66.2&3

Maa sita ke kataksh matra se koti koti brahmand ke sath koti, brahma, vishnu aur rudra ke sath koti indra utpatti, sanchalan tatha lay hota hai

नारिभिः पन्नोगोभिश्च देवीभिश्च समंततः।

सिद्ध गंद्धर्व पत्नीभिश्च नागराज सुतादिभिश्च।

अनेक कोटि संख्याभिश्च शक्ति समुपासते।

Adi ramayan 3.28.28 &29a

Maa sita ke upasana se anek koti sankhya me nagraj, dev, deviyon, nariyon ityadi ke puja hojati gai

सहस्र रामरामेति जपितं येन धीमतां।

सीतानाम्ना च तस्यैव फलं ज्ञेयं च तत्सम्।।

~ {भविष्य_पुराण / प्रतिसर्ग_पर्व (४/१५/५७)}

बुद्धिमान लोग जिस रामनाम का हजार बार जप करते हैं , उसके फल के बराबर सीता के एक नाम का फल जानना चाहिए।

यज्ञ दान तपस्तीर्थ स्वाध्याय आत्मबोधतः।
कोटि संख्यं राम नाम्नि पावित्र्यं वर्तते प्रिये।।
ततः कोटि गुण पुण्यं सीता नाम सनातनम्।
इति ज्ञात्वा भजन्तयेतान् मुनयो नारदादयः।।

परमेश्वर सदाशिव कहते हैं - यज्ञ, दान, तप,तीर्थ, वेद अध्ययन, आत्म ज्ञान आदि कर्मों से जितना फल मिलता है उसका कोटि गुणा फल "राम" नाम से ही मिलता है और श्रीराम नाम का कोटि गुणा फल "सीता" नाम से ही प्राप्त होता है।

~Lomesh samhita
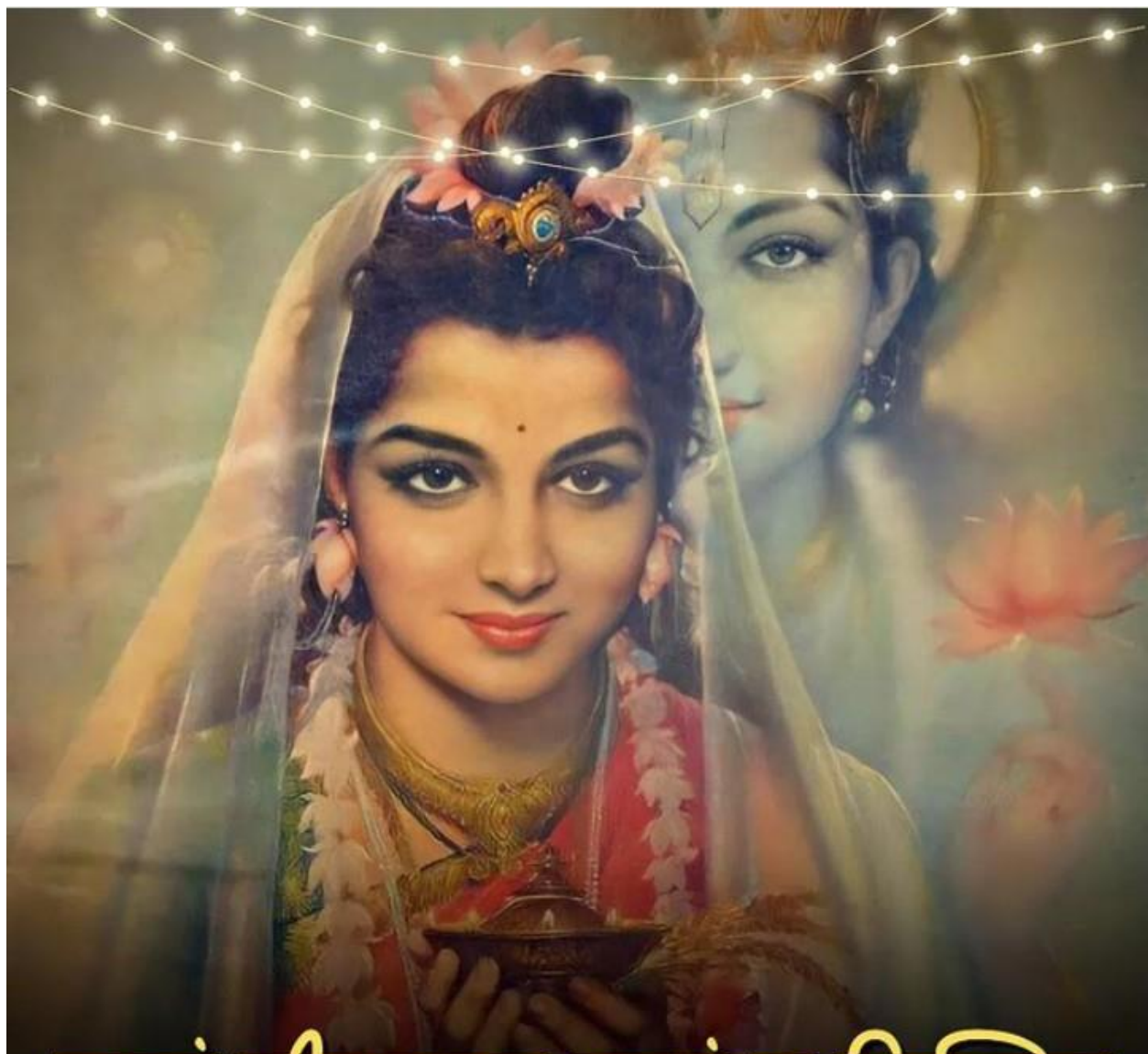
ज्ञानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित्
There is no gyana equivalent
to The name of Sri Sita

अथ ह सीता सावित्री ।सोमꣳ राजानं चकमे
। (Taittirīya Brāhmaṇa 2.3.10.1)~Now Sītā is Sāvitrī who desired King Soma(Rāma).

निष्कलापि कलाधीशा निर्गुणापि गुणात्मिका।
नित्योत्सेवा पर स्निग्धा रामावयव सम्भव।।

~<सदाशिव संहिता

स्वयं किसी की कला न होकर भी सारी कलाओं की स्वामिनी है। प्राकृतिक गुणों से रहित होकर भी दिव्य गुणों गुणा सागर है। नित्य उत्सव स्वरुपा तथा परात्पर है । अत्यन्त स्नेहमयी है। श्रीराम के वामांग से समुत्पन्ना है।

आनंदावयव भिन्ना नियलीला सविग्रहा
सशक्तिमयो धात्री सर्वशक्तिवरा स्तथा।
प्रेमनित्या सुखोत्पत्ति नित्य रुपा चिदात्मिका
ज्ञानमयी ज्ञानभुता ज्ञानदा ज्ञाप्ति मात्रिका।।

अर्धमात्रात्मिका शाश्वत बिन्दुनाद स्वरुपिणी
ब्रह्मोत्पति रसावेशा ब्रह्मैक पद्मव्यया।।

~sadashiv samhita

श्री सीताजी आनंदस्वरुपिणी है, आनंद स्वरुप से अभिन्न हैं।

नित्य लीला की विधायिणी, लीला रस विग्रह है। सर्वशक्तिमयी तथा सारे शक्तियों की जननी तथा सारे शक्तियों की शिरोमणि है। प्रेमस्वरूपणी है नित्य है । सुख की उत्पत्ति आप से होती है। नित्य सुख स्वरुपा है। सच्चिदानन्द की आत्मा है। ज्ञानमयी तथा ज्ञानस्वरुपा है। बिन्दु नाद स्वरुपिणी है। ब्रह्मरस की उत्पत्ति करनेवाली है। रस के आवेश में रहती है।ब्रह्मपद वाच्य की अव्यय स्वरुप है।

सीता कला अंशाद् बह्वयश्च शक्तयः संभवन्ति हि।

Many shaktis have been created from Maa Sita’s ansh kala.

MahaSambhu samhita

(Quoted in shri Ramank)

जानक्यांश आदि संभुतानेक ब्रह्माण्डकारिणी।
सा मुलप्रकृतिर् ज्ञेयो महामाया स्वरुपिणी।।

All shaktis have originated from Maa Sita’s ansh kala and she playfully creates infinte universes. Sarveshwari adijagadamba maa Sita is adidevi of all shaktis and hence called as mool prakruti and is independent ruler of all

~maha ramayan

सीता नित्या पराशक्ति एकः दशरथिः प्रभुः।

राम एव परः सत्यः नान्यः सत्य कदाचन्।

श्री सीता जी नित्य परात्पर शक्ति है और भगवान तो केवल श्री रामचन्द्र जी हैं। श्री राम ही परम सत्य और उनसे भिन्न कोई और नहीं है।

~सदाशिव संहिता

एक शास्त्र गीयते यत्र सीता, कर्माप्येक पुज्यते यत्र सीता।

एका लोके देवताचापि सीता, मंत्रश्चैकोऽण्यस्ति सीतेति नाम।।

जहां श्री सीता जी का परत्व हो वही मुख्य शास्त्र है, कर्म पुजाधिक की एक ही देवता, सर्वोपरि श्री सीता, और श्री सीता नाम ही महामंत्र है।

~brahma ramayan

संप्रवक्ष्यामि याश्शाक्तिर्जान्क्यांशास्त्रित्रिंशका।

निकटे संस्थिता नित्या सर्वाभरणभुषिता।

श्री र्भुलीला तथाकृष्टा क्रियायोगोन्निता तथा।

ज्ञाना पार्वी तथा सत्या कथिता चापि अनुग्रह।

ईशाना चैव कीर्तिश्च विद्येला क्रान्तिलवनी।

चन्द्रिकापि तथाक्रुरा कान्हा वै भीषणी तथा।

क्षाता च नन्दनी शोका शांता च विमला तथा।

शुभदा शोभना पुण्या कला चापि अथ मालिनी।

महोदया ह्लादिनी शक्तया एकादशत्रिकाः।

भुकुटीं दर्शयतीमा जानक्या नित्यमेव च।

From ansh of maa sita, 33 goddesses appears

श्री

भु

लीला

उत्कृष्टा

क्रिया

योग

उन्नती

ज्ञान

पार्वी

सत्य

अनुग्रह

ईशाना

कीर्ति

विद्या

ईला

क्रान्ति

लवनी

चन्द्रिका

क्रुरा

कान्ता

भीषणि

क्षांता

नंदनी

शोका

शान्ता

विमला

शुभदा

शोभना

पुण्या

कला

मालिनी

महोदया

आह्लादिनी

All these shakti/goddesses always watch maa sita’s eyes and by her eyes, all these are controlled.

~maha ramayan

सद्यस्ते सिद्धिमायान्ति ये सीता पदचिन्तकाः ।
यस्याः सङ्कल्प मात्र ेण जन्मस्थितिलयादिकाः ॥

~ One who meditates on the Lotus feet of Bhagvati Sita, That Person Attains all siddhis, The one from whose Sankalpa this universe is Created, Destroyed and Nurtured.

(Padma puran 5.66.32)

इच्छा -ज्ञान-क्रिया शक्ति त्रयं यद्भाव साधनम् ।
तद् ब्रह्मसत्ता सामान्यं सीता तत्वमुपास्महे ॥

~ We meditate on that Sita Tattvam, which is Brahman Herself, in whose Attainment, The Three saktis of Iccha, Gyana and Kriya Are aides.

(Sitopanishad)

**सीता भगवती ज्ञेया मूल प्रकृति संज्ञिता ।
प्रणवत्त्वात्प्रकृतिर्रीति वदन्ति ब्रह्म वादिनः ॥**

~ Sri Sita ji is Bhagvati and the Mool prakriti. Being the cause of Omkara itself, Brahmvaadis call you "prakriti" as well.

(sri Rama tapniye Upanishad)

**यस्य भावविपाकेन प्रसन्ना जगदीश्वरी ।
पुत्रित्वमागताचक्र लीलाः भुवन पाविनीः।।**

~ That Where the Goddess of The Universe, on seeing the Pura Bhāva, Happily incarnated as The Daughter and Performed Past times, which Purified the Three worlds, That Auspicious Land Is known as the Landa of Mithila.

(śrī Lomash Samhītā 16.24)

अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा ।

यथा नः सुभगासिस यथा नः सुफलासिस ।।

(ऋ. वे. ४।५७।६)

हे रघुवर प्रिय (सुभगे) मां सीता! हम आपकी वंदना करते है, आप हमारे अनुकूल रहे। हमें सभी ऐश्वर्य से परिपूर्ण करे तथा हमें शत्रु (काम, क्रोध, लोभ और मोह) के विनाश हेतु भक्ति का फल प्रदान करें।

अर्थवर्ण उत्तरार्ध की श्रुति

जनकस्य राज्ञः सद्मनि सीतोत्पन्ना सा सर्वपरानंद मुर्तिगायन्ति मुनयोऽपि देवाश्च, कार्यकारणाभ्यामेव परा तथैव कार्यकारणार्थे शक्तिर्यस्या विधात्रीश्रीगौरीणां सैव कत्रीं रामानंद सैव जनकस्य योग फलमिव भाति।

महाराजा जनक के राजमहल में जो श्रीसीता जी प्रकट हुई, वे सर्वोपरि आनंदस्वरुपिणी है। मुनिगण तथा देवगण भी उनका गान करते हैं। कार्य कारणों से परे और कार्य कारण शक्ति सम्पन्ना हैं। ब्रह्माणी, लक्ष्मी और गौरी आदि शक्तियों की उत्पादिका है। रामानंद स्वरुपिणी है।

वही श्री जनक जी के योगफल के समान परम शोभा देती है।

बृहद विष्णु पुराण

जगद्धात्री महामायां ब्रह्मरुपा सनातनीम्।
दृष्ट्या प्रमुदिता देवता अप्सर किन्नराः।।

On seeing adi jagatjanni, mahamaya and sanatan Brahm swarupini Maa Sita, devas, apsaras and kinnars became very happy.

इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥
(ऋग्वेद ४.५७.७)

Indraḥ Sītāṃ ni gṛhṇātu tāṃ pūṣānu yacchatu

Sā naḥ payasvatī duhāmuttarāmuttarāṃ samām

(ṛgvēda 4.57.7)

श्रीराम (श्रुतियोंमें इन्द्र का मुख्य अर्थ परमैश्वर्यशाली परमेश्वर श्रीराम ही है) सीताको ग्रहण करें और राजा जनक उन्हें श्रीरामको प्रदान करें। वह पयस्वती सीता, आनेवाले वर्षोंमें, हमें धन-धान्य प्रदान करती रहें।

“May Śrī Rāma (who is renowned as Indra in all Vedas) accept Sita, May king Janaka offer (his daughter) Sita (as bounty of valor) to Shri Rama. That Sita, the bestower of nectarine-bliss, may bestow all her blessings, and prosperity to us in all the coming Years.”

Same hymn has come in Atharva-veda with a little difference:

इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम्॥
(अथर्व-वेद ३.१६.४)

Indraḥ sītāṃ nigṛhṇātu tāṃ pūṣābhirakṣatu□

Sā naḥ payasvatī duhāmuttarāmuttarāṃ samām□

(atharva-vēda 3.16.4)

As the consort of Sita can be no other Bhagavad-swarupa of Hari, except Shri Rama, therefore the name ‘Indra’ in primary sense refers to Sri Rama alone in Vedas.

Again, Śrī Rāma eliminates the Maya-Mriga (demon Maarich disguised as Golden-deer) in Valmiki Ramayana, It is also mentioned in Rig Veda 1.80.7

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन्वीर्यम्।
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम्॥

(ऋग्वेद १.०८०.०७)

Indra tubhyamidadrivō’nuttaṃ vajrinvīryam □

Yaddha tyaṃ māyinaṃ mṛgaṃ tamu tvaṃ māyayāvadhīrarcannanu svarājyam □

(ṛgvēda 1.80.7)

“Oh’ Śrī Rāma renowned as Indra in Vedas, You eliminated the Maya-Mriga (māyinaṃ mṛgaṃ - Maaricha disguised as the golden deer). All praises to Your Imperial sway, O’ Śrī Rāma !

सीतायाश्च त्रिविधाशाः श्री भूनीलादिभेदतः ।
श्री भवेद् रुक्मिणी भूः स्यात् सत्यभामा वृढव्रता ॥
नीलास्याद् राधिका देवी सर्वलोकैक पूजिता ।

(ब्रह्मांड पुराण)

नादो महाप्रभुर्ज्ञेयो भरतः शङ्खनामकः ।
कलायाः पुरुषः साक्षाल्लक्ष्मणो धरणीधरः ॥ ३॥
कलातीता भगवती स्वयं सीतेति संज्ञिता ।
तत्परः परमात्मा च श्रीरामः पुरुषोत्तमः ॥ ४॥

महान भगवान नाद को भरत के नाम से जाना जाता है और शंख के नाम से जाना जाता है।

कला के पुरुष सीधे लक्ष्मण हैं जो पृथ्वी को धारण करते हैं। ३॥

दिव्य देवी स्वयं सीता कहलाती हैं।

भगवान के सर्वोच्च व्यक्तित्व, भगवान राम, उनके प्रति समर्पित हैं और सर्वोच्च आत्मा हैं। ४॥

~tarasara upanishad

एक शास्त्र गीयते यत्र सीता, कर्माप्येक पुज्यते यत्र सीता।

एका लोके देवताचापि सीता, मंत्रश्चैकोऽण्यस्ति सीतेति नाम।।

जहां श्री सीता जी का परत्व हो वही मुख्य शास्त्र है,
कर्म पुजाधिक की एक ही देवता, सर्वोपरि श्री सीता,
और श्री सीता नाम ही महामंत्र है।

~brahma ramayan

यज्ञ दान तपस्तीर्थ स्वाध्याय आत्मबोधतः।
कोटि संख्यं राम नाम्नि पावित्र्यं वर्तते प्रिये।।
ततः कोटि गुण पुण्यं सीता नाम सनातनम्।
इति ज्ञात्वा भजन्तयेतान् मुनयो नारदादयः।।

परमेश्वर सदाशिव कहते हैं – यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, वेद अध्ययन, आत्म ज्ञान आदि कर्मों से जितना फल मिलता है उसका कोटि गुणा फल "राम" नाम से ही मिलता है और श्रीराम नाम का कोटि गुणा फल "सीता" नाम से ही प्राप्त होता है।

~Lomesh samhita

अथ ह सीता सावित्री ।सोमः राजानं चकमे

। (Taittirīya Brāhmaṇa 2.3.10.1)~Now Sītā is Sāvitrī who desired King Soma(Rima).

सुर्यस्यापि भवेत् सुर्यो ह्यग्नेरग्नि प्रभोः प्रभुः।
श्रियाः श्रीश्च भवेदग्र्या कीर्त्याः क्रीतिः क्षमाक्षमा।
दैवतं देवतानां च भुतानां भुतसत्तमः।

Valmiki Ramayan 2.44.15-16

Shri Ram is sun of sun, Agni of Agni, Prabhu (narayan) of Prabhu (narayan). Maa Sita is laxmi of laxmi, kirti of kirti and kshama of kshama.

They are devas of devas and element of elements

यां सीतेत्यभिजानासि येयं तिष्ठति ते गृहे।
कालरात्रि इति तां विद्धि सर्वलंकविनाशिनीम्।।

Hanuman ji says:- O Ravan! What do you think that maa Sita is residing in your house, you should understand that she is kalratri herself who can destroy all of your lanka kingdom.

Valmiki Ramayan 5.52.34

सैषा सर्वेश्वरी देवी सर्वभुतप्रवर्तिका।

ये सर्वेश्वरी देवी (श्री सीता) ही समस्त प्राणियों की संचालिका है।

Adbhut Ramayan 24.10b

ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्ति प्राणशक्तिः इति त्रयम्।
सर्वेसाम् एव शक्तीनां शक्तिमन्तो विनिर्मिता।।

समस्त शक्तियों (including ज्ञान शक्ति, क्रियाशक्ति और प्राणशक्ति) तथा शक्तिमान की रचना भी तुम्हारे (सीता जी के) द्वारा हुआ है।

Adbhut Ramayan 24.13

सीतारामात्मकं सर्वं सर्वकारणकारणम्।
अनयोरेकतातत्त्वं गुणतोरूपतोपि च ।।
द्वयोर्नित्यं द्विधारूपं तत्त्वतो नित्यमेकता।

(बृहद–विष्णु पुराण)

“Whole everything is pervaded by SītāRāma. Śrī SītāRāma are the cause of all the causes. They are in fact one and same entity, also by virtue of being equal in their qualities and beauty-elegance-charm of their divine forms.

सर्वदेवम समुत्पन्ना सर्वदेवमयी ईश्वरी।
सर्वपोरूषवल्ली च सर्वधर्म अधिकारिणी।।

~ Maa Sita is the Goddess from whom all the gods originates and contains all the gods. She is the one who grants porush (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) of all men and the authority of all religions.

(Rudrayamal tantra)

श्रीरामः समवाप्य भुमितनयां आद्या जगत्स्वामिनीं सर्वात्मना वरहेतुसुन्दरतनुः कारुण्यपुर्णेक्षणः।
विद्युद्वर्ण विराजमान वसनस्त्रलोक्य चुड़ामणिः शोभामाप जगत्त्रेयऽप्यनुपमां मुक्ताविराद्रलः।।

समस्त संसार के आत्मा स्वरुप (सर्वात्मा) सुन्दर शरीर को धारण किए हुए, करुणा पुर्ण नेत्रोंवालों, विद्युत के समान वर्णवाले, पीले वस्त्रों को धारण किए हुए, त्रिलोकी के चुड़ामणि स्वरुप गले में मोती की माला पहने हुए श्रीराम जगत् की आदि स्वामिनी और भुमितनया सीता को प्राप्त करके तीनों लोको में अनुपम शोभा को प्राप्त हुए।

Anand Ramayan सारकाण्डम् 3.329

सीता शक्तिरचिन्त्येयं त्वन्मूर्त्तिरचलापरा ॥
सीतोन्मना भवान् राम समनेयं भवाञ्छिवः ।
विद्येयं मातृका शुद्धा त्वं तु देव सदाशिवः ॥
ईश्वरस्त्वमविद्येयं मायेयं त्वं च त्र्यम्बकः ॥
सीता रमा भवान् विष्णुः सीता गौरी भवाञ्छिवः ।
सीता स्वयं हि सावित्री भवान् ब्रह्मा चतुर्मुखः ॥
सीता शची भवानिन्द्रः सीता स्वाहानलो भवान् ।
सीता संहारिणी देवी यमरूपधरो भवान् ॥
सीता तु तामसीदेवी निर्ऋतिस्त्वं रघूत्तम ।
सीता तु भार्गवीदेवी वरुणस्त्वं जगत्पतिः ॥
सीता सदागतिर्देवो जगत्प्राणः स्वयं विभो ।
सीता हि सर्वसम्पत्तिः कुबेरस्त्वं सदोदितः ॥

ऐश्वर्ये जानकी साक्षादीशानस्त्वं महेश्वरः ।
सीता तु रोहिणीदेवी चन्द्रस्त्वं लोकसौख्यदः ॥
सीता संज्ञा भवान् सूर्यः सीता रात्रिर्दिनं भवान् ।
सीता च दक्षिणामूर्तिर्यज्ञमूर्तिर्भवान् विभो ॥
सीता भुक्तिर्भगवती भोगस्त्वं पुरुषोत्तम ।
सीतेयं मुक्तिरचला मोक्षस्त्वमकुतोभयः ॥
सीता शक्तिर्जगद्धात्री शक्तिमांस्त्वं महेश्वरः ।
सीता देवी महाकाली महाकालस्त्वमेव हि ॥

'श्रीराम ! सीता उन्मना हैं तो आप राम हैं, ये समना हैं तो आप शिव हैं, ये मातृका शुद्धा विद्या हैं तो आप सदाशिव हैं, ये अविद्या हैं तो आप ईश्वर हैं, ये माया हैं तो आप त्रिनेत्रधारी शिव हैं, सीता लक्ष्मी हैं तो आप विष्णु हैं, सीता गौरी हैं तो आप शिव हैं, सीता स्वयं सावित्री हैं तो आप चतुर्मुख ब्रह्मा हैं। सीता शची हैं तो आप इन्द्र हैं, सीता स्वाहा हैं तो आप अग्निदेव हैं, सीता संहार करनेवाली देवी हैं तो आप यमराज हैं। रघुश्रेष्ठ ! सीता तामसी देवी हैं तो आप निर्ऋति हैं, सीता भार्गवी देवी हैं तो आप जगदीश्वर वरुण हैं। विभो ! सीता सदागति देवी (सदा गमन करनेवाली वायुशक्ति) हैं तो आप जगत्के प्राणस्वरूप स्वयं वायुदेव हैं, सीता समस्त सम्पत्तिस्वरूपा हैं तो आप सदा वृद्धिगत कुबेर हैं। जानकी ऐश्वर्यस्वरूपा हैं और आप साक्षात् देवाधिदेव ईशान हैं, सीता रोहिणीदेवी हैं तो आप लोकोंको सुख प्रदान करनेवाले चन्द्रदेव हैं। विभो ! सीता संज्ञा हैं तो आप सूर्य हैं, सीता रात्रि हैं तो आप दिन हैं, सीता दक्षिणा देवी हैं तो आप यज्ञपुरुष हैं। पुरुषोत्तम ! भगवती सीता भुक्ति हैं तो आप भोग हैं। ये सीता अचला मुक्ति हैं तो आप भयरहित मोक्ष हैं। सीता जगत्का धारण-पोषण करनेवाली शक्ति हैं तो आप शक्तिसम्पन्न महेश्वर हैं, सीता महाकाली देवी हैं तो महाकाल भी आप ही हैं। श्रीराम ! इस विषयमें बहुत कहनेसे क्या लाभ, आप परात्पर ब्रह्म हैं और ये सीता आपकी विभूति हैं, जो विश्वरूपसे विस्तारको प्राप्त हो रही हैं।

~Skand puran

माँ जानकी